

Padma Shri



PROF. (DR.) JITENDRA NATH PANDE (POSTHUMOUS)

Prof. (Dr.) Jitendra Nath Pande was an Indian Pulmonologist and Professor and Head of Medicine at the All India Institute of Medical Studies (AIIMS). He was widely credited with being the father of Respiratory and Critical Care Medicine in India. He was the first to introduce the practice of bronchoscopy in the country upon returning from Stockholm. After becoming head of the department in 1993 he established the nation's first medical Intensive Care Unit at AIIMS.

2. Born on 14th June, 1941 in Shikohabad, Uttar Pradesh, Dr. Pande came to New Delhi at the age of 17 to join the prestigious All India Institute of Medical Sciences (AIIMS) as a medical student. He graduated at the top of his class in 1962, then completed his MD in Medicine at AIIMS in 1966. He devoted his life and career to the practice of Medicine at this apex institution, quickly rising to be one of the youngest Professors of Medicine at the age of 48. He then served as Head of the Department of Medicine from 1993 until his retirement in 2003. He continued to practice as Senior Consultant at the Sitaram Bhartia Institute of Science and Research, New Delhi, till his demise.

3. Dr. Pande also trained at a number of other world renowned institutions. He went to the Royal Postgraduate Medical School at Hammersmith Hospital, London in 1975 on a Commonwealth Fellowship. He trained in bronchoscopy at the Karolinska Institute, Stockholm in 1979. In 1988-89 he completed a Fellowship in Epidemiology at the University of North Carolina in Chapel Hill, USA. Dr. Pande was a veritable encyclopedia of medical knowledge and kept abreast of the latest literature in a number of specialties besides his own. His clinical acumen was uncanny, and generations of medical students and residents at AIIMS would marvel at his diagnostic skill at his regular evening ward rounds. He loved to teach, and his lectures routinely drew crowds of students, residents and faculty.

4. Dr. Pande's areas of interest included high altitude physiology, lung mechanics in health and disease, exercise physiology, tuberculosis, bronchiectasis and interstitial lung disease. His command over Statistics and Epidemiology made him a prolific researcher, with innumerable publications in high impact medical journals. The Supreme Court of India cited his study on the adverse cardiorespiratory effects of air pollution while issuing their landmark judgement in 1998 that required public transport vehicles to switch to cleaner fuel in the form of CNG. Dr. Pande also edited a textbook entitled "Respiratory Medicine in the Tropics", published by Oxford University Press.

5. Dr. Pande was a founding fellow of the National College of Chest Physicians and a fellow of the National Academy of Medical Sciences (NAMS). For some years he was the chief editor of the Annals of NAMS and editor of Indian Journal of Chest Diseases and Allied Sciences. He served as an expert to several government bodies, including ICMR and was actively involved in the investigation of the Bhopal Gas tragedy. The NAMS honoured him with the title of Emeritus Professor. He was awarded the Ranbaxy Research Award for Medical Sciences and Clinical Research in 1999 and received the Shri Om Prakash Bhasin award for Science and Technology (Health and Medical Sciences) for 2008-09. Dr. Pande's life was spent treating the sickest and poorest in the country. Every graduating class from India's premier medical institution for nearly half a century proudly and fondly remembers being taught and inspired by him, learning so much more than just the practice of medicine. His legacy will live on through them.

6. Dr. Pande passed away on 23rd May, 2020



प्रो. (डॉ.) जितेन्द्र नाथ पाँडे (मरणोपरांत)

प्रो. (डॉ.) जितेन्द्र नाथ पाँडे एक भारतीय पल्मोनोलॉजिस्ट और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में प्रोफेसर और मेडिसिन विभाग के प्रमुख थे। उन्हें भारत में श्वसन और क्रिटिकल केयर मेडिसिन का जनक कहा जाता है। वह, स्टॉकहोम से लौटने पर देश में ब्रॉकोस्कोपी प्रक्रिया शुरू करने वाले पहले डॉक्टर थे। 1993 में विभाग का प्रमुख बनने के बाद उन्होंने एम्स में देश की पहली गहन चिकित्सा इकाई की स्थापना की।

2. 14 जून, 1941 में उत्तर प्रदेश के शिकोहाबाद में जन्मे डॉ. पाँडे 17 साल की उम्र में मेडिकल छात्र के रूप में प्रतिष्ठित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में प्रवेश लेने के लिए नई दिल्ली आए थे। उन्होंने 1962 में अपनी कक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त करके ग्रेजुएशन किया और फिर 1966 में एम्स में मेडिसिन में एमडी की पढ़ाई पूरी की। उन्होंने इसी शीर्ष संस्था में चिकित्सा कार्य के लिए अपना जीवन और करियर समर्पित कर दिया और जल्द ही 48 वर्ष की आयु में के सबसे कम उम्र के चिकित्सा प्रोफेसर बन गए। इसके बाद, उन्होंने 1993 से 2003 तक अपनी सेवानिवृत्ति तक मेडिसिन विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य किया। देहांत होने तक वह सीताराम भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड रिसर्च, नई दिल्ली में वरिष्ठ सलाहकार के रूप में कार्य करते रहे।

3. डॉ. पाँडे ने अनेक विश्वविख्यात संस्थानों में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। वह 1975 में कॉमनवेल्थ फेलोशिप पर लंदन के हैमरस्मिथ अस्पताल में रॉयल पोस्टग्रेजुएट मेडिकल स्कूल गए थे। उन्होंने 1979 में, स्टॉकहोम के कैरोलिंस्का इंस्टीट्यूट में ब्रॉकोस्कोपी का प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1988-89 में, उन्होंने चैपल हिल, अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलिना में एपिडेमियोलॉजी में फेलोशिप पूरी की। वह वास्तव में चिकित्सा ज्ञान के विश्वकोश थे और अपने विषय के साथ-साथ, अन्य कई विषयों के नवीनतम साहित्य से अवगत रहते थे। उनका नैदानिक कौशल बेजोड़ था और एम्स के चिकित्सा छात्र और रेजिडेंट डॉक्टर वार्ड में नियमित सांध्यकालीन दौरों के समय उनके नैदानिक कौशल से विस्मित हो जाते थे। उन्हें अध्यापन कार्य बहुत पसंद था और उनके व्याख्यान सुनने के लिए हमेशा छात्र, रेजिडेंट डॉक्टर और संकाय की भीड़ इकट्ठी हो जाती थी।

4. डॉ. पाँडे के रुचि के क्षेत्रों में हाई एल्टिट्यूड फिजियोलॉजी, स्वस्थ और रोगग्रस्त फेफड़ों की कार्य प्रणाली, एक्सरसाइज फिजियोलॉजी, तपेदिक, ब्रॉकिएक्टिसिस और फेफड़ों की अंतरालीय बीमारी शामिल थी। सांख्यिकी और महामारी विज्ञान पर जानकारी के आधार पर, वह प्रखर शोधकर्ता बन गए और अनेक विख्यात जरनलों में उनके अनगिनत शोधपत्र प्रकाशित हुए। भारत के उच्चतम न्यायालय ने, सार्वजनिक परिवहन वाहनों में स्वच्छ ईंधन के रूप में सीएनजी अपनाने पर बल देते हुए, 1998 के अपने ऐतिहासिक निर्णय में, हृदय-श्वसन पर वायु प्रदूषण के दुष्प्रभाव पर उनके अध्ययन का हवाला दिया था। उन्होंने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित "रेस्पाइटरी मेडिसिन इन द ट्रोपिक्स" नामक पाठ्यपुस्तक का भी संपादन किया।

5. डॉ. पाँडे नेशनल कॉलेज ऑफ चैस्ट फिजिशियन के संस्थापक फेलो और नेशनल एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंसेज (एनएएमएस) के फेलो थे। कुछ वर्षों के लिए वह नेशनल एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंसेज वार्षिकी के मुख्य संपादक और इंडियन जरनल ऑफ चैस्ट डिजीजिस एंड अलाइड साइंसिज के संपादक थे। उन्होंने आईसीएमआर सहित कई सरकारी निकायों के विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया और वह भोपाल गैस त्रासदी की जांच में सक्रिय रूप से शामिल थे। एनएएमएस ने उन्हें एमेरिटस प्रोफेसर की उपाधि से सम्मानित किया। उन्हें 1999 में चिकित्सा विज्ञान और नैदानिक अनुसंधान के लिए रैनबैक्सी रिसर्च पुरस्कार से सम्मानित किया गया और 2008-09 के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी (स्वास्थ्य और चिकित्सा विज्ञान) के लिए श्री ओम प्रकाश भसीन पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने अपना जीवन देश के सबसे बीमार और सबसे गरीब के इलाज में लगा दिया। लगभग आधी सदी तक भारत के उत्कृष्ट चिकित्सा संस्थान की हरेक स्नातक कक्षा गर्व से और प्यार से यह याद रखती आई है कि किस प्रकार उनके द्वारा उसे पढ़ाया गया और प्रेरित किया गया, और किस प्रकार मेडिकल प्रैक्टिस से कहीं ज्यादा उनसे सीखने को मिला। अपनी विरासत के रूप में वह हमेशा जीवित रहेंगे।

6. डॉ. पाँडे का 23 मई, 2020 को देहावसान हो गया।